INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 16 | ISSUE - 2 | MARCH – 2026

मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में चित्रित पुरुष के सामाजिक, राजनीतिक स्वरूप का अध्ययन

सीतू पटेल
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. आशुतोष कुमार द्विवेदी
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

मन्नू भंडारी हिन्दी कथा–साहित्य की एक सशक्त लेखिका हैं, जिनकी रचनाओं में स्त्री–पुरुष संबंधों का यथार्थवादी चित्रण मिलता है। उनके कथा–साहित्य में पुरुष पात्र केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं, बल्कि सामाजिक एवं राजनीतिक संरचनाओं के प्रतिनिधि रूप में भी दिखाई देते हैं। यह शोध–पत्र उनके कथा–साहित्य में चित्रित पुरुष पात्रों के सामाजिक राजनीतिक स्वरूप का विश्लेषण करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मन्नू भंडारी के पुरुष पात्र पारंपरिक पितृसत्तात्मक सोच, सामाजिक सत्ता संरचना और बदलते आधुनिक मूल्यों के बीच संघर्षरत दिखाई देते हैं।

मुख्य शब्द – मन्नू भंडारी, कथा साहित्य, पुरुष पात्र, सामाजिक संरचना, राजनीतिक व्यवस्था, मध्यवर्गीय जीवन एवं स्त्री–पुरुष संबंध।

प्रस्तावना –

मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में पुरुष पात्र केवल कथानक के सहायक तत्व नहीं हैं, बल्कि वे भारतीय समाज की संरचनात्मक जटिलताओं, पितृसत्तात्मक प्रवृत्तियों तथा बदलते सामाजिक–राजनीतिक परिवेश के प्रतिनिधि रूप में उभरते हैं। विशेषतः मन्नू भंडारी के उपन्यासों में पुरुष पात्रों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि वे सत्ता, अधिकार, असुरक्षा, भावनात्मक द्वन्द्व और सामाजिक दायित्वों के बीच निरंतर संघर्षरत व्यक्तित्व हैं।

प्रसिद्ध उपन्यास आपका बंटी में 'अजय' एक ऐसे पुरुष पात्र के रूप में सामने आता है, जो आधुनिकता और परंपरा के द्वन्द्व में उलझा हुआ है। अजय अपने वैवाहिक जीवन में असफलता के कारण पत्नी शकुन से अलग हो जाता है, किंतु वह अपने पुत्र बंटी के प्रति दायित्वों को पूरी तरह निभाने में असमर्थ सिद्ध होता है। अजय का चरित्र मध्यवर्गीय पुरुष की उस मानसिकता को व्यक्त करता है, जिसमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता की आकांक्षा तो प्रबल होती है, परंतु पारिवारिक जिम्मेदारियों के निर्वहन में कमजोरी दिखाई देती है।[1]

इसी प्रकार महाभोज में 'भूषण', 'रघुवीर' और 'सत्यम' जैसे पुरुष पात्र राजनीतिक सत्ता, भ्रष्टाचार और सामाजिक अन्याय के प्रतीक के रूप में उभरते हैं। भूषण सत्ता–लोलुप नेता है, जो अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु जनभावनाओं का शोषण करता है, जबकि रघुवीर जैसे पात्र प्रशासनिक तंत्र की निष्क्रियता और नैतिक पतन को

दर्शाते हैं। सत्यम का चरित्र अपेक्षाकृत संवेदनशील है, जो व्यवस्था के विरुद्ध खड़ा होने का साहस करता है, किंतु अंततः वह भी राजनीतिक षड्यंत्रों का शिकार बन जाता है। इन पात्रों के माध्यम से मन्नू भण्डारी ने स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीतिक विडंबनाओं को उजागर किया है।[2]

उपन्यास एक इंच मुस्कान (सह–लेखन : राजेन्द्र यादव) में 'अमर' का चरित्र एक बौद्धिक, संवेदनशील किंतु आत्मकेंद्रित पुरुष का प्रतिनिधित्व करता है। अमर अपने लेखन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अत्यधिक महत्व देता है, जिसके कारण वह पारिवारिक संबंधों में संतुलन स्थापित नहीं कर पाता। वह आधुनिक शिक्षित पुरुष की उस दुविधा को व्यक्त करता है, जिसमें व्यक्तिगत आकांक्षाएँ सामाजिक उत्तरदायित्वों से टकराती हैं।[3]

इन उपन्यासों के पुरुष पात्र यह सिद्ध करते हैं कि मन्नू भण्डारी ने पुरुष को केवल शोषक या प्रभुत्वशाली सत्ता के रूप में नहीं चित्रित किया, बल्कि उसे परिस्थितियों से जूझते, असफलताओं से ग्रस्त और आंतरिक द्वन्द्व से पीड़ित मानव के रूप में प्रस्तुत किया है। अजय, भूषण, रघुवीर, सत्यम और अमर जैसे पात्र यह दर्शाते हैं कि पितृसत्ता केवल स्त्री को ही नहीं, बल्कि पुरुष को भी एक निश्चित भूमिका में बाँध देती है, जिससे वह स्वतंत्र मानवीय विकास नहीं कर पाता।

मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में पुरुष पात्र सामाजिक, पारिवारिक एवं राजनीतिक संरचनाओं के बहुआयामी प्रतिनिधि हैं। वे भारतीय मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाओं, नैतिक संकटों तथा बदलती सामाजिक चेतना के सशक्त प्रतीक के रूप में स्थापित होते हैं।

विश्लेषण –

मन्नू भंडारी के पुरुष पात्र मध्यवर्गीय मानसिकता, पितृसत्तात्मक सोच तथा सत्ता–लालसा से गहराई से प्रभावित दिखाई देते हैं। वे परिवार के मुखिया, निर्णयकर्ता और सामाजिक प्रतिष्ठा के संरक्षक के रूप में अपनी भूमिका निभाते हैं, किंतु साथ ही आधुनिकता के दबाव और आंतरिक द्वंद्व से भी जूझते हैं। मन्नू भण्डारी ने पुरुष पात्रों के माध्यम से समाज में विद्यमान शक्ति–संबंधों, नैतिक संघर्षों और बदलते मूल्यों का यथार्थपरक चित्रण प्रस्तुत किया है।

मन्नू भण्डारी के कथा–साहित्य में पुरुष पात्र मुख्यतः मध्यवर्गीय समाज की मानसिकता, मूल्य–व्यवस्था और जीवन–दृष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये पात्र केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित न होकर सामाजिक संरचना के वाहक के रूप में उभरते हैं। अधिकांश पुरुष पात्र परिवार के मुखिया की भूमिका में दिखाई देते हैं, जहाँ वे निर्णय लेने की शक्ति, आर्थिक नियंत्रण तथा सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाए रखने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते हैं।

उपन्यास आपका बंटी में 'अजय' ऐसा ही एक पुरुष पात्र है, जो पारिवारिक संबंधों में अधिकारवादी दृष्टिकोण अपनाता है। उसके लिए व्यक्तिगत भावनाओं की अपेक्षा सामाजिक प्रतिष्ठा और नियंत्रण अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। अजय का चरित्र मध्यवर्गीय पुरुष की उस मानसिकता को उद्घाटित करता है, जिसमें सामाजिक दबाव और मान–सम्मान की चिंता पारिवारिक संबंधों को प्रभावित करती है।[4]

मन्नू भण्डारी के कथा–साहित्य में पुरुष पात्र पितृसत्तात्मक व्यवस्था के प्रमुख वाहक के रूप में चित्रित किए गए हैं। पितृसत्ता यहाँ केवल एक सामाजिक संरचना नहीं, बल्कि एक मानसिक ढाँचा है, जो पुरुष और स्त्री दोनों के व्यवहार को नियंत्रित करता है। पुरुष पात्र स्त्री की स्वतंत्रता, निर्णय क्षमता तथा आत्म–अभिव्यक्ति पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित करते दिखाई देते हैं।

किन्तु मन्नू भण्डारी यह भी स्पष्ट करती हैं कि यह व्यवस्था पुरुषों के लिए भी दमनकारी सिद्ध होती है। समाज द्वारा पुरुष पर "परिवार का रक्षक", "निर्णयकर्ता" और "सम्मान का प्रतीक" बनने का दबाव उसे भावनात्मक रूप से कठोर बना देता है। इस प्रकार पुरुष पात्र केवल पितृसत्ता के प्रवर्तक नहीं, बल्कि उसके प्रभाव से आक्रांत व्यक्तित्व भी हैं।[5]

उपन्यास महाभोज में पुरुष पात्रों का राजनीतिक स्वरूप अत्यंत सशक्त रूप में उभरता है। 'भूषण', 'रघुवीर' और 'सत्यम' जैसे पात्र सत्ता, भ्रष्टाचार और राजनीतिक षड्यंत्रों के प्रतीक हैं।

भूषण जैसे पात्र सत्ता–लोलुपता के कारण नैतिक मूल्यों का परित्याग कर देते हैं, जबकि रघुवीर प्रशासनिक तंत्र की निष्क्रियता और नैतिक पतन का प्रतिनिधित्व करता है। सत्यम अपेक्षाकृत संवेदनशील पात्र

है, जो व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष करता है, किंतु अंततः राजनीतिक तंत्र का शिकार बन जाता है। इन पात्रों के माध्यम से लेखिका ने स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजनीति की विडंबनाओं को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है।[6]

मन्नू भण्डारी के कथा–साहित्य में पुरुष पात्र परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व में फँसे हुए दिखाई देते हैं। एक ओर वे पारंपरिक मूल्यों–पारिवारिक दायित्व, सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक सुरक्षा से बंधे होते हैं, तो दूसरी ओर वे व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्म–अभिव्यक्ति की आकांक्षा भी रखते हैं।

उपन्यास एक इंच मुस्कान के 'अमर' का चरित्र इस द्वंद्व का सशक्त उदाहरण है। अमर एक संवेदनशील और बौद्धिक पुरुष है, किंतु वह अपने व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक दायित्वों के बीच संतुलन स्थापित नहीं कर पाता। इस प्रकार आधुनिकता पुरुष पात्रों के भीतर मानसिक तनाव, अपराधबोध और अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न करती है।[7]

मन्नू भण्डारी के कथा–साहित्य में पुरुष पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये पात्र आत्मसंघर्ष, असुरक्षा, हीनता–बोध तथा अपराधबोध से ग्रस्त दिखाई देते हैं। उनकी यह मानसिक स्थिति उन्हें कई बार कठोर और नियंत्रणकारी व्यवहार की ओर प्रेरित करती है। अजय, अमर और सत्यम जैसे पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि पुरुष केवल बाहरी सत्ता का प्रतिनिधि नहीं, बल्कि आंतरिक द्वंद्वों से जूझता हुआ व्यक्ति भी है। मन्नू भण्डारी ने उनके मनोविज्ञान को सूक्ष्मता से चित्रित करते हुए यह दिखाया है कि सामाजिक अपेक्षाएँ और व्यक्तिगत इच्छाएँ किस प्रकार उनके व्यक्तित्व को विखंडित करती हैं।

निष्कर्षः

निष्कर्षतः मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में पुरुष पात्र केवल पारंपरिक या शक्ति प्रधान भूमिकाओं तक सीमित नहीं हैं। वे समाज, परिवार और राजनीतिक परिवेश के प्रभाव में संवेदनशील, संघर्षशील और निर्णयशील व्यक्तित्व के रूप में उभरते हैं। उनके पात्र अपने व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक जिम्मेदारियों और राजनीतिक दबावों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनके जीवन में जटिलताएँ और मानसिक संघर्ष उत्पन्न होते हैं। मन्नू भण्डारी के लेखन में पुरुष पात्र सामाजिक संरचनाओं, पारिवारिक अपेक्षाओं और राजनीतिक परिदृश्यों से सीधे प्रभावित होते हैं। उनके निर्णय और व्यवहार न केवल व्यक्तिगत हितों पर आधारित होते हैं, बल्कि समाज और परिवेश की अपेक्षाओं तथा नैतिक बाध्यताओं का परिणाम भी होते हैं। इस दृष्टि से, पुरुष पात्र केवल शक्ति या नियंत्रण का प्रतीक नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ में संवेदनशील और जिम्मेदार मानव के रूप में प्रस्तुत होते हैं। इस प्रकार मन्नू भण्डारी का कथा साहित्य पुरुष पात्रों के माध्यम से समाज और राजनीति के बीच के जटिल सम्बन्धों को प्रभावशाली ढंग से उजागर करता है। उनके पात्र सामाजिक–राजनीतिक दबावों के प्रभाव में अपने निर्णय, संघर्ष और संवेदनशीलता के माध्यम से आधुनिक पुरुष के यथार्थवादी स्वरूप का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस दृष्टि से भण्डारी का साहित्य पुरुष जीवन और उसके सामाजिक–राजनीतिक संदर्भों के अध्ययन के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

संदर्भ –

[1] भण्डारी, मन्नू – आपका बंटी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1971, पृष्ठ 45
[2] भण्डारी, मन्नू – महाभोज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979, पृष्ठ 112
[3] भण्डारी, मन्नू एवं यादव, राजेन्द्र – एक इंच मुस्कान, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1963, पृष्ठ 78
[4] भण्डारी, मन्नू – आपका बंटी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1971, पृष्ठ 52
[5] भण्डारी, मन्नू, यही सच है एवं अन्य कहानियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1966, पृष्ठ 88
[6] भण्डारी, मन्नू – महाभोज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979, पृष्ठ 134
[7] भण्डारी, मन्नू एवं यादव, राजेन्द्र – एक इंच मुस्कान, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1963, पृष्ठ 101